# सात भाइ एक बहिन

लेखक : शांति भारत

लोक कथा

नोट :– खोरठा में प्रकाशित लोककथाएँ जिनका शीर्षक मिलता–जुलता है –

लोककथा

1. सात भाई एक बहिन – लेखक : शांति भारत

2. सात भाइ–बहिन – लेखक : गजाधर महतो प्रभाकर

❖ जे.एस.एस.सी के पाठ्य में 'सात भाइ एक बहिन – लेखक : शांति भारत' पढनें दिया है, इस बात का ध्यान रखें।



© Click on :- Career foundation

⇒इस कहनी की मुख्य पात्र है : सुगा।

यहा सात भाईयों की इकलौती बहन है, इसके माता–पिता का देहांत हो जाने के उपरांत सातो भाई इसे बड़े लाड–प्यार से पालते है।

सातों भाई जब व्यापार हेतु बाहर चले जाते हैं तो भाभियाँ सुगा को ईर्ष्या के कारण बहुत तंग कराती हैं मगर अंत सब ठीक हो जाता है।

## कहानी विस्तार से :–

सात भाइयों की एक प्यारी–दुलारी बहन थी –'सुगा'। उसके माता–पिता का देहांत हो चुका था। सातों भाईयों ने बहुत ही लाड़–प्यार से अपनी बहन को पाला था। सातों भाईयों की शादी हो जाती है। अपनी

बहन से भाईयों का अत्यधिक लगाव देखकर भाभियों को बहुत ईर्ष्या होती थी। वे सोंचती थीं कि अपनी बहन को अत्यधिक प्यार करने की वजह से हमारे पति हमलोगो की ओर अधिक ध्यान नही देते है। इसलिए (ऊपर) बाहर से तो सभी



© Click on :- Career foundation

भाभियाँ प्यार से 'नुनी–नुनी' कहकर पुकारती थीं। मगर भीतर ही भीतर सुगा से कैसे छुटकारा मिले इसका उपाय सोंचते रहती थीं।

एक बार सातों भाई व्यापार करने के लिए बाहर जाने लगे। जाते समय सातों भाईयों ने अपनी पत्नियों से कहा कि–

"सुगा हमलोगों को बहुत मुश्किल से मिली हुई दुलारू बहन है, उसको किसी भी प्रकार से कोई भी दुःख नहीं होना चाहिए।"

इतना कहकर सातो भाई घोड़े पे सवार होकर व्यापार के लिए चले जाते हैं

बिना मर्दों के घर की माल्किन महिलाएँ हो गईं। सातों गोतनी के हाथों में अब घर–गृहस्थी की जिम्मेदारी थी। उनका जैसा मन होता वैसा कपड़ा पहनने और खाना खाने लगीं। लेकिन इन सबमें मंझली जो थी। वो थोड़ा ईष्यालु थी क्योंकि उसके मायके में अधिक खेती–बारी और चमक–दमक थी। वो बाकी गोतनियों को बहकाते रहती थी कि सुगिया को अत्यधिक दुलार देने से वो (कपार) सर पे चढ जाएगी। और दि अक्ल (बुद्धि) नहीं सीखेगी तो उसके ससुरार के लोग हम सातों गोतनियो को ताना मारकर गाली देंगी।

© Click on :- Career foundation

यह सलाह मसवरा होने के पश्चात सभी गोतनियाँ बहाना (खुनुस) ढूँढने लगी। अब सातों खाना खातीं मगर सुगिया को पूछती तक नहीं थी। बेचारी सुगिया खाई तो खाई नही तो फिर भूखे पेट सोती थी। जो भाभी सब उसे प्यार से नुनी–नुनी कहती थीं वो अब – यह लो सुगिआ कहने लगीं थी।

ऐसे ही एक दिन सातों गोतनी ने सुगा को फूटा हुआ घड़ा (घइला) देते हुए पानी लाने को कहा–

"एहलो सुगिया, बाँध से भोइर घइला पानी लइ आन, तब खुदी–चुनिक माँड़ ढुकचे ले देबउ।"

यह लो सुगिया तालाब से घड़ा से घड़ा भरकर पानी ले आओ तभी(खुदी–चुनिक) बुकनी अनाज का माँड़ पीने (ढुकचे) दूंगी।

बेचारी सुगिया घड़ा लेकर तालाब पर गई और घाट पर बैठकर फफक–फफक रोने लगी –

"सुनो गे सुनो चिडियाँ सब, मेरी पीड़ा को सातों भाई व्यापार को गए

सातों भाभियों ने बहुत दुख दिया।

आओ रे !तालाब के मेंढक सब, सुगा रोती है। "

सुगा का रोना सुनकर तालाब के मेंढक सब सुगा के आके पूछने लगे–



© Click on :- Career foundation

– नुनी तुम क्यों रो रही हो?

सुगा ने अपना फूटा हुआ उन सभी को दिखाते हुए भाभियों की कही हुई सारी बाते सुना दी। इतना सुनने के बाद सभी मेंढक घड़े के छिद्र की जगहों पे बैठ गए और सुगा पानी भरकर घर को वापस लौट आई।

सातो गोतनी भरा हुआ घड़ा देखकर सुगा को 'खुदी–चुनिक माँड़' पीने देते हैं। सुगा बेचारी आँसु पोंछते–पोंछते माँड़ पीती है।

दुसरे दिन सातो गोतनी ने सुबह में सुगा से कहा कि –

"बैठे–बैठे खाने से तो नदी का रेत भी नहीं जुट पाएगा। आज जंगल जाकर बिना बंधन (रस्सी) बाँधे एक बोझा लकड़ी (एक गट्ठर लकड़ी) ले आओ तभी खुदी–चुनी का माँड़ पीने दूंगी।"

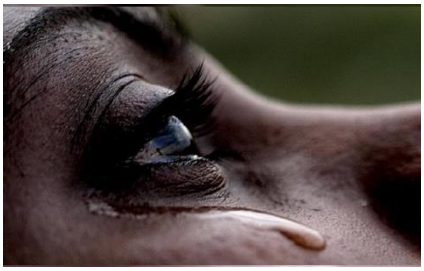

फिर सुगा रोते–रोते जंगल को चली जाती है। लेकिन बिना बांधने वाले (बंधन) के सहारे लकड़ी ले जाए तो कइसे! यह सोंचकर वह जंगल के भीतर रोन लगती है–



© Click on :- Career foundation

"सुन गे सुन चरँइया, हमर बड़ी दुख,

सातो भाय बनिजें गेला

सातो भोजी बड़ी दुख देला!

आवा रे बोनेक साँप, सुगा कांदो हो।"

सुगिया रोते हुए जंगल के साँपो को आह्वान करती है। उसकी करूण क्रंदन (रोना) सुनकर जंगल के सभी जीव–जंतु उसके समीप आकर जमा हो जाते हैं। और पूछते हैं – क्यों रोती हो सुगा ??

इस पर सुगा अपनी भाभी सब की कही बात को सभी जीवों का सुना देती है।

तभी एक लंबा धामना साँप उसके लकड़ियो के गट्ठर हेतु बंधन बन जाता है और साँप कहता है – "आओ सुगा अपना बोझा उठाओं लेकिन इसे थोड़ा धीरे–धीरे नीचे रखना।"

सुगा बिना बंधन वाला लकड़ी का गट्ठर लेकर अपने घर को लौट आती हैं। धीरे–धीरे अपना बोझा आँगन में रखती है इसके बाद साँ बोझा से बाहर निकलकर जंगल को लौट जाता है। भाभी सबों ने अपनी ननद की बुद्धि को देखकर अपना सर पकड़ लिए। उसके पश्चात सुगा को 'खुदी–चुनि का माँड पीने लगती है।

© Click on :- Career foundation

अगले दिन सातों गोतनी एक जुते हुए खेत में एक पइला सरसों का सुगिया सभी सरसों का दाना छिंटकर सुगा से कहती हैं –"ऐ सुगिया सभी सरसों के बीजों को चुनकर वापस पाइला भरोगी तभी 'खुदी–चुनि का माँड़' पीने को मिलेगा।"

सुगा की आँखों के आगे अंधेरा छा जाता है। सुगा जुते हुए खेत में बैठकर रोने लगती है–

सुन गे सुन चरँइयाँ, हामर बड़ी दुख,

सातो भाई बनिजें गेला,

सातो भउजी बड़ी दुख देला।

आवा रे चरइँ–चिनगुनी,

सुगा कांदो हो।

सुगा रोते हुए सभी चिड़ियों का आह्वान (पुकारती) करती है।

सुगा की क्रंदन (रोना) सुनकर आकास मे उड़ने वाले कबूतरों का दल उसके पास आकर पूछते हैं – हाँ नुनी तुम किस तकलीफ की वजह से रो रही हो?

तभी सुगा अपनी भाभियों की कही बात को सुना देती है और कहती है कि एक पइला सरसों आखिर इस जुते हुए खेत से मैं कैसे चुनुंगी।



© Click on :- Career foundation

तभी सारे कबूतर मिलकर बुने हुए सरसों के दानों को जल्दी–जल्दी चुनकर पइला भर देते हैं और फिर सभी कबूतर उड़ जाते हैं। सुगा भरे हुए पइला को लेकर जब घर को लौटती है तो सभी भाभियाँ अचम्भित हो जाती हैं।

अब करें तो क्या करें? उनका सारा षडयंत्र (चाल) बेकार हो जाता है। सुगा को 'खुदी चुनी का माँड़' पीने को देने के बाद अपना दिमाग लगाने लगती हैं।

अबकी बार आखिर क्या ऊपाय किया जाए!

ऐसे ही सोंचते–समझते कुछ अब उसकी भाभियाँ उसको परेशान नहीं करती और आकार बड़ी दुलार से कहती हैं –

"नुनी सुगा हमलोगो ने आपको जो भी दुःख दिया है सब भूल जाइएगा और अपने भाईयों को कुछ मत बतलाइएगा। थोड़ा रूककर आगे कहती हैं कि नुनी! बहुत दिनों से घर में डूमर का सब्जी नही बना है। चलिए आज डुमर तोड़ते है।" प्रेम का प्यास मनुष्य प्रेम पाकर अभिभूत हो जाता है। सुगा अपनी भाभियों के संग खाना खाने के बाद डूमर छिलने वाला हथियर (पछिया) लेकर हँसते–खलते डूमर तोडने चली जाती है।

जंगल में एक वृक्ष पे खूब सारा डूमर फला हुआ था। सातो गोतनी सुगा को ठेल–घकेल कर पेड़ पर चढा देते है। जब तक सुगा डूमर तोड़ तोड़कर गिराती रही तब तक सभी भाभियों ने मिलकर पेड़ के चारों तरफ बेर



© Click on :- Career foundation

आर बबूल का काँटा बोझा का बोझा लगा डाला। यह देखकर सुगा अचम्भित हो जाती है।

सातो गोतनी हिलते–डुलते घर लौट आती हैं मगर सुगा अकेले पेड़ पर रह जाती है। वह नीचे उतरने का खूब प्रयास करती है। मगर उसके सारे प्रयास बेकार हो जाते हैं। ऐसे में उस घने जंगल में वह रोने लगती है –

"सुन गे सुन चरइयाँ,

हामर बड़ी दुख,

सातो भाइ वनिजें गेला,

सातो भउजी बड़ी दुख देला।

आवा रे परदेसी दादा,

सुगा कांदो हो। "



© Click on :- Career foundation

सुगा रोते–रोते अपने परदेस गए भाईयों को पुकारती है।

सुगा की क्रंदन (रोना) सुनकर जंगल के सभी पशु पक्षी भी रोने लगते हैं। तब तक रात हो जाती है। पेड़ की डाली पर लेटकर सुगा रोते रहती है।

उसी रात उसी मार्ग से उसके सातों भाई व्यापार करेक परदेस से लौटे रहे थे। सातो भाई आराम करने उसी डूमर पेड़ के नीचे आ गए। तभी छोटे भाई के शरीर पर एक दो बूँद आँसु अन्य भाईयों को सुनाता है तो सभी मसाल जलाकर पेड़ के ऊपर देखने लगते है। वह देखते है कि पेड़ के ऊपर उनकी दुलारू बहन सुगा रो रही है।

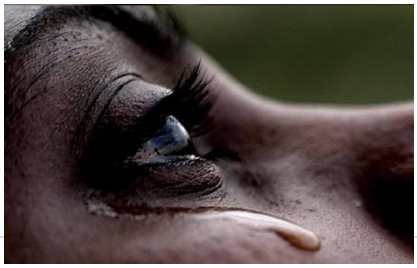



© Click on :- Career foundation

जल्दी–जल्दी काँटा वगैरह उखाड़ कर फेंक देते है और सुगा को नीचे उतार देते है। सुगा एक एक करेक सारी कहानी अपने भाइयों को सुना देती है कि कैसे उसकी भाभियों ने उसको सताया। यह सुनकर सारे भाई गुस्से से काँपने लगते हैं।

अहले सुबह जब सभी भाई अपने घर पहुँचे तो सभी की पत्नियाँ खूब जब अपनी बहन का हाल चाल पूछा तो उन्होने कहा कि वो बाहर खेलने को गई है।

इतना सुनकर सभी भाई अपने गुस्से को संभाल नही पाए और सातो अपनी पत्नियों को पीटने लगे। सभी माँइ–बाप चिल्लाने लगी और कहने लगी–

"हमने सोंचा कि, सुगा पर घर जाएगी इसलिए उनकी बुद्धिमता की परीक्षा करे थे। "

तब तक सुगा आकार अपनी भाभियों का समर्थन करेक उन्हे मार खाने से बचा लेती है।

कुछ दिन तक सभी हँसी–खुशी से रहते हैं। तब तक सुगा का ब्याह पहाड़ के बगल के गाँव में हो जाता है। ब्याह के दिन जब वो बिदाई के समय अपने



© Click on :- Career foundation

ससुराल जा रही थी उस समय सातों भाईयों के साथ–साथ सातों गोतनी भी जोर–जोर से रो रही थी।

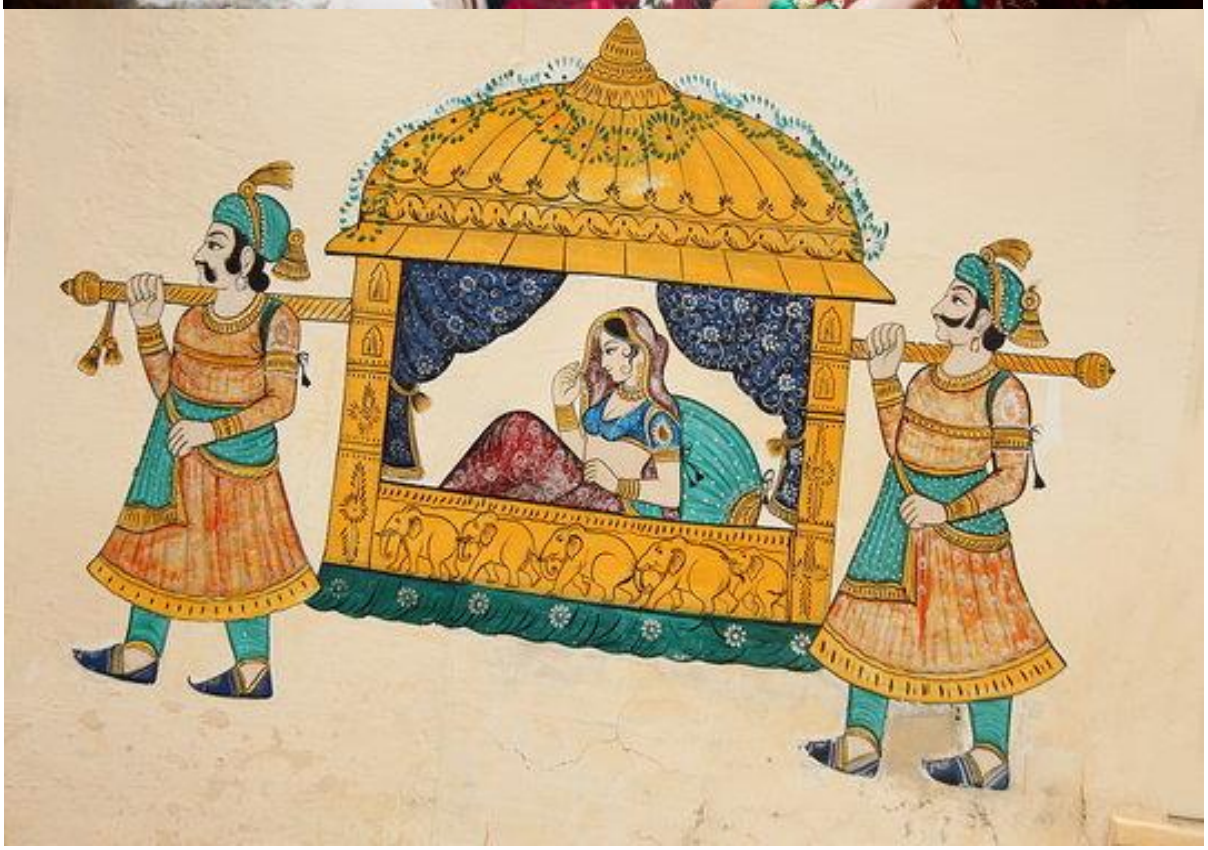



© Click on :- Career foundation